Shri Guru Kavach Evam Stotra

श्रीगुरु कवच एवं स्तोत्र

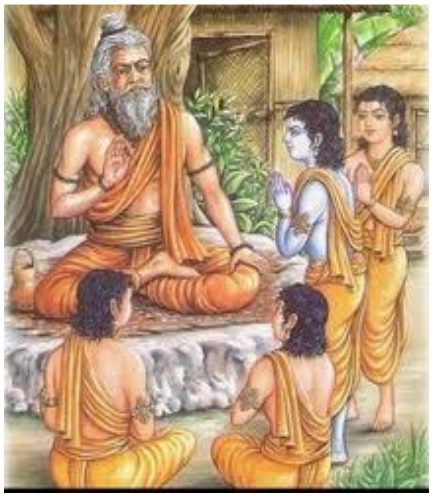

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

यामलतंत्र में गुरु शब्द गु- कार को सिद्धिप्रद, र- कार को पापनाशक तथा उ- कार को शम्भुस्वरूप कहा गया है- इसलिये गुरु इन तीनों का स्वरूप कहकर कथित हुए हैं। देवोपासना में गुरु साधक के मार्गदर्शक होते हैं। गुरु के आत्मदान एवं शिष्य के आत्मसमर्पण से दीक्षा संस्कार सम्पन्न होता है। गुरुदेव मनुष्य की योग्यता, श्रद्धा एवं परिस्थिति अनुसार मंत्रोपदेश देते हैं। एक उच्चकोटि साधक गुरु, ईश्वर के स्वभाव को सामान्य मनुष्य से कही अधिक जानते और समझते हैं। इसलिये साधक के लिये सद्गुरु का स्थान ईश्वर से कम नहीं होना चाहिये। अपने गुरु के प्रति निष्ठा, भक्ति, सेवा और समर्पण साधक के लिये वह आशीर्वाद रूपी सीढ़ीयां हैं, जिन पर चलकर साधक ईश्वरीय कृपा को सिद्ध करता है। शास्त्रपुराणों में कई स्थानों पर माता-पिता से अधिक महिमा आध्यात्मिक गुरु की कही गयी है। मनु स्मृति में लिखा है- 'वेदज्ञ आचार्य विधिपूर्वक जिस शरीर को उत्पन्न करते हैं, वह शरीर सत्य, अजर और अमर होता है। जो गुरु ब्राह्मण दोनों कानों को निर्दोष, सत्यस्वरूप वेद ध्वनि से भर देते हैं, उन्हें माता पिता के समान जानना चाहिये, कभी भी उससे द्रोह न करें।' विष्णुस्मृति में

लिखा है- 'पुरुष के तीन गुरु हैं- माता, पिता और मंत्रदाता गुरु। इन तीनों की नित्य ही सेवा करनी चाहिये। गुरु आदेश करें या न करें, शिष्य सर्वदा उनका हितकर कार्य का यत्न करे एवं अध्ययन में लगा रहे। शरीर, वाणी, ज्ञानेन्द्रिय और मन को रोककर हाथ जोड़े हुए गुरु के मुख को देखता हुआ खड़ा रहे।' महाभारत में कहा है- 'माता, पिता, अग्नि, आत्मा और गुरु- मनुष्य को इन पांच अग्नियों की बड़े यत्न से सेवा करनी चाहिये।' गुरु शिष्य आचार संहिता का कई तंत्रशास्त्रों में विस्तृत वर्णन मिलता है, जिसका सम्पूर्ण वर्णन यहां नहीं किया जा सकता है।

मेरे एक शिष्य को स्वप्न में कुछ दुष्टशक्तियों द्वारा कष्ट दिखाई दिया। उसने भयभीत होते हुए स्वप्न में मेरा और भैरव जी का स्मरण किया। मैंने भैरवजी के साथ तत्काल वहां आकर उन दुष्ट शक्तियों का विनाश किया एवं अपने शिष्य की रक्षा की। इस प्रकार के कई शिष्यों के स्वप्न अनुभव हैं, जिनमें मैंने उनके इष्टदेवता के साथ आकर उनकी रक्षा की अथवा उन्हें स्वप्न में मंत्र प्रदान किये अथवा उनके इष्टदेव के दर्शन करवाये और वास्तव में मुझे इस बात का ज्ञान भी नहीं होता। अगर गुरु एक अच्छा उपासक है, कई प्रकार की विशिष्ट साधनाएं

सम्पन्न कर चुका है, पवित्रात्मा है तो स्वयं देवता ही उस गुरु का मान बढ़ाने के लिये एवं शिष्य को उनकी आध्यात्मिक ऊर्जा से अवगत कराने हेतु ही इस प्रकार की दैवीय अनुभूतियां करवाते हैं। इसके अतिरिक्त मंत्रशक्ति एवं तपस्या के प्रभाव से गुरु वास्तव में भी इस प्रकार के उत्पातों को शान्त करने की क्षमता रखता है। अगर स्वयं गुरु आध्यात्मिक रूप से बलवान नही है तो शिष्य को आध्यात्मिक बल किस प्रकार प्राप्त हो सकता है। जिन महानुभावों के पास आध्यात्मिक ऊर्जा एवं विशिष्ट ज्ञान है, उनकों पहचानना थोड़ा मुश्किल तो है, परंतु असम्भव नहीं। इसलिये मनुष्य सर्वप्रथम स्वयं अपने गुरु बने इसके बाद गुरु धारण करे।

गुरुदेव ध्यानम्- सहस्त्रदल पंकजे सकलशीत रश्मिप्रभम्। वराभय कराम्बुजं विमलगंधपुष्पाम्बरम्।। प्रसन्नवदनेक्षणं सकल देवतारूपिणम्। स्मरेच्छिरसि हंसगं तदभिधान पूर्वं गुरुम्।।

सहस्त्रार में कपाल के पास ब्रह्मरन्ध में गुरु का ध्यान करने के पश्चात् गुरुपूजन करना चाहिये। अगर वास्तव में आपके गुरु नित्य दो-चार घंटे देवोपासना करते हैं, तो आपको भी इतने समय साधना करने में कोई खास परेशानी नहीं होगी। यह

वास्तविक गुरु से दीक्षा का सुप्रभाव होता है। देवता और गुरु के शनै-शनै लक्षण मनुष्य में प्रकट होने लगते हैं। इसलिये नित्य पांच-दस मिनट किसी भी विधि से अपने गुरु की पूजा अवश्य करनी चाहिये। जिनकी जन्मकुण्डली में गुरु ग्रह अशुभ फल दे रहें हों, तो उन्हें स्वगुरु, साधुसंतो एवं वृद्धों की परमसेवा करनी चाहिये।

श्रीगुरु गायत्री- 'ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्माय धीमहि तन्नो गुरु प्रचोदयात्।'

गुरुपूजनमंत्र- 'ॐ श्रीमहागुरुवे नमः।'

श्रीगुरु कवच- देव्युवाच- भूतनाथ महादेव! कवचं तस्य मे वद। गुरुदेवस्य देवेश! साक्षाद् ब्रह्मस्वरूपिणः।।

ईश्वरोवाच- अथातः कथयामीशे कवचं मोक्षदायकम्। यस्य ज्ञानं विना देवि! न सिद्धिर्न च सद्गतिः।।

ब्रह्मादयोऽपि गिरिजे सर्वत्र याजिनः स्मृताः। अस्य प्रसादात् सकला वेदागमपुरः सराः।।

कवचस्यास्य देवेशि! ऋषिर्विष्णुरुदाहृतः। छन्दो विराड् देवता च गुरुदेवः स्वयं शिवः।।

चतुर्वर्गज्ञानमार्गे विनियोगः प्रकीर्कितः। सहस्रारे महापद्मे कर्पूरधवलो गुरुः।।

वामोरुस्थित शक्तिर्यः सर्वत्र परिरक्षतु। परमाख्यो गुरुः पातु शिरसं मम वल्लभे!।।

परापराख्यो नासां मे परमेष्ठी मुखं सदा। कण्ठं मम सदा पातु प्रह्लानन्द नाथकः।।

बाहू द्वौ सनकानन्दः कुमारानन्दनाथकः। वशिष्ठानन्दनाथश्च हृदयं पातु सर्वदा।।

क्रोधानन्द कटिं पातु सुखानन्दः पदं मम। ध्यानानन्दश्च सर्वांगं बोधानन्दश्च कानने।।

सर्वत्र गुरुवः पातु सर्व ईश्वररूपिणः। इति ते कथितं भद्रे! कवचं परमं शिवे।।

भक्तिहीने दुराचारे दत्वैतं मृत्युमाप्नुयात्। अस्यैव पठनाद् देवि! धारणात् श्रवणात् प्रिये!।।

जायते मंत्रसिद्धिश्च किमन्यत् कथयामि ते। कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ शिखायां वीरवन्दिते!।।

धारणान्नाशयेत् पापं गंगायां कल्मषं यथा। इदं कवचमज्ञात्वा यदि मंत्र जपेत् प्रिये!।।

तत् सर्वं निष्फलं कृत्वा गुरुर्याति सुनिश्चितम्। शिवे रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन।।

श्रीगुरु स्तोत्रम्- श्रीमहादेव्युवाच- गुरोरर्मन्त्रस्य देवस्य धर्मस्य तस्य एव वा। विशेषस्तु महादेव! तद् वदस्व दयानिधे।।

श्रीमहादेव उवाच- जीवात्मनं परमात्मनं दानं ध्यानं योगो ज्ञानम्। उत्कल काशीगंगामरणं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।

प्राणं देहं गेहं राज्यं स्वर्गं भोगं योगं मुक्तिम्। भार्यामिष्टं पुत्रं मित्रं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।

वानप्रस्थं यतिविधधर्मं पारमहंस्यं भिक्षुकचरितम्। साधोः सेवां बहुसुखभुक्तिं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।

विष्णोभक्तिं पूजनरक्तिं वैष्णवसेवां मातरिभक्तिम्। विष्णोरिव पितृसेवनयोगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।

प्रत्याहारं चेन्द्रिययजनं प्राणायां न्यासविधानम्। इष्टे पूजा जप तपभक्तिर्न न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।

काली दुर्गा कमला भुवना त्रिपुरा भीमा बगलापूर्णा। श्रीमातंगी धूमा तारा न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।

मात्स्यं कौर्मं श्रीवाराहं नरहरिरूपं वामनचरितम्। नरनारायाण चरितं योगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।

श्रीभृगुदेवं श्रीरघुनाथं श्रीयदुनाथं बौद्धं कल्क्यम्। अवतारा दश वेदविधानं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।

गंगा काशी कांची द्वारा मायाऽयोध्याऽवन्ती मथुरा। यमुना रेवा पुष्करतीर्थं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।

गोकुलगमनं गोपुररमणं श्रीवृन्दावन मधुपुररटनम्। एतत् सर्वंसुन्दरि! मातर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।

तुलसीसेवा हरिहरभक्तिः गंगासागर संगममुक्तिः। किमपरमधिकं कृष्णेभक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।

एतत्स्तोत्रं पठति च नित्यं मोक्षज्ञानी सोऽपि च धन्यम्। ब्रह्माण्डान्तर्यद् यद्ध्येयं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्।।

श्रीस्त्री गुरु कवचम्- स्त्री (शक्ति) गुरु साक्षात् शक्तिस्वरूपा है। शक्ति आराधना में स्त्री गुरु से दीक्षा लेना सौभाग्यशाली होता है। गुरु रूप में अपनी माता हो तो अति उत्तम है। स्त्री गुरु के पास से दीक्षा ग्रहण शुभ कहा गया है। माता के पास से दीक्षा ग्रहण तद्पेक्षा आठ गुणा अधिक शुभ कहा गया है। शास्त्रों में कुछ स्थानों पर विधवा स्त्री से गुरुदीक्षा निषेद्ध कही गयी है। परंतु जो सदाचार परायणा, सर्वशुभस्त्री गुणों से सुसम्पन्न, जितेन्द्रिया, समस्त तंत्रार्थ में अभिज्ञा, पूजाकार्य में निरत, वे समस्त गुरु के योग्या हैं। उनमें विधवा सधवा आदि का विचार नहीं करना चाहिये, क्योंकि ज्ञानस्वरूपा तो कोई भी हो सकती है। इस विषय में मनु भगवान् कहते हैं- उत्तम रत्न, विद्या, धन, पतिव्रता स्त्री, अच्छे वचन, अनेक प्रकार की कारीगरी ये सब जहां से प्राप्त हो ले आना चाहिये। इस प्रकार के कई उपदेश हमारे शास्त्रों में उपस्थित हैं। भगवती धूमावती विधवास्वरूप में ही जगतपूजनीया है। विधवा स्त्री के साथ अन्य पुरुषों के संग से उनकी गरिमा पर किसी प्रकार का कोई प्रश्न चिह्न न लगे, शायद इसी कारण ऐसा कहा गया होगा। अतः

पुरुषजन साधकों को स्त्रीगुरु से स्वमाता की भांति पुत्रवत आचरण करना चाहिये।

श्रीस्त्री गुरु कवच- शिव उवाच- स्तोत्रं समाप्तं देवेशि! कवचं शृणु सादरम्। यस्य स्मरण मात्रेण वागीश समतां व्रजेत्।।

स्त्रीगुरु कवचस्यास्य सदाशिव ऋषिः स्मृतः। तवाख्या देवता ख्याता चतुर्वर्गफलप्रदा।।

क्लीं बीजं चक्षुषोर्मध्ये सर्वांगे मे सदाऽवतु। ऐं बीजं मे मुखं पातु ह्रीं जिह्वां परिरक्षतु।।

श्रीं बीजं स्कन्धदेशं मे हसखफ्रें भुजद्वयम्। हकारः कण्ठ देशं मे सकारः षोडशं दलम्।।

क्ष-वर्णस्तदधः पातु लकारो हृदयं मम। वकारः पृष्ठदेशं च रकारो दक्षपार्श्वकम्।।

युंकारो वामपार्श्वं च सकारो मेरुमेव च। हकारो मे दशभुजं क्षकारो वामहस्तकम्।।

मकारश्चांगुलि पातु लकारो मे नखं वतु। वकारो मे नितम्बं च रकारो जठरं वतु।।

र्यींकारः पाद युगलं हसौः सर्वांगमेव च। हसौर्लिंगं च लोमानि केशं च परिरक्षतु।।

ऐं बीजं पातु पूर्वे मे ह्रीं बीजं दक्षिणे वतु। श्री बीजं पश्चिमे पातु उत्तरे भूतसम्भवम्।।

श्रीं पातु अग्निकोणे च वेदाख्या नैर्ऋते वतु। देव्याम्बा पातु वायव्यां शम्भौ श्रीपादुका तथा।।

पूजयामि तथा चोर्ध्वं नमश्चाधः सदाऽवतु। इति ते कथितं कान्ते! कवचं परमाद्भुतम्।।

गुरुमंत्र जपित्वा तु कवचं प्रपठेद् यदि। स सिद्धः सगणः सोऽपि शिव न संशयः।।

पूजा काले पठेद् यस्तु कवचं मंत्रविग्रहं। पूजाफलं भवेत् तस्य सत्यं सत्यं सुरेश्वरि।।

त्रिसंध्यं यः पठेद् देवि स सिद्धौ नात्र संशयः। भुर्जे विलिखितं चैव स्वर्णस्थं धारयेद् यदि।।

तस्य दर्शन मात्रेण वादिनो निष्प्रभां गताः। विवादे जयमाप्नोति रणे च निर्ऋतेः समः।।

सभायां जयमाप्नोति मम तुल्यो न संशयः। सहस्रारे भावयान् तां त्रिसंध्यं प्रपठेद् यदि।।

स एव सिद्धो लोकेषु निर्वाण पदमीयते। समस्त मंगलं नाम कवचं परमाद्भुतम्।।

यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन्। देयं शिष्याय शान्ताय चान्यथा पतनं भवेत्।।

अभक्तेभ्यश्च देवेशि! पुत्रेभ्योऽपि न दर्शयेत्। इदं कवचमज्ञात्वा दशविद्यां च यो जपेत्।। स नाप्नोति फलं तस्य चान्ते च नरकं ब्रजेत्।

श्रीस्त्री गुरु स्तोत्रम्- नमस्ते देव-देवेशि! नमस्ते हरपूजिते!। ब्रह्मविद्यास्वरूपायै तस्यै नित्यं नमो नमः।।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया। यया चक्षुरुन्मीलितं तस्यै नित्यं नमो नमः।।

भवबंधन पाशस्य तारिणी जननी परा। ज्ञानदा मोक्षदा नित्या तस्यै नित्यं नमो नमः।।

श्रीनाथवामभागस्था सदया सुरपूजिता। सदाविज्ञानदात्री च तस्यै नित्यं नमो नमः।।

सहस्रारे महापद्मे सदाऽऽनन्दस्वरूपिणी। महामोक्षप्रदा देवि तस्यै नित्यं नमो नमः।।

ब्रह्मविष्णुस्वरूपा च महारुद्रस्वरूपिणी। त्रिगुणात्मस्वरूपा च सदा घूर्णितलोचना।।

स्वनाथं च समालिंग्य तस्यै नित्यं नमो नमः। ब्रह्मविष्णुशिवत्वादि जीवन्मुक्ति प्रदायिनी।। ज्ञानविज्ञानदात्री च तस्यै श्रीगुरुवै नमः।

आध्यात्मिक मार्ग पर गुरु की आवश्यकता– आज के वर्तमान काल में कुछ बुद्धिमान लोग गुरु की आवश्यकता को स्वीकार नहीं करते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ लोगों की धारणा यह भी होती है कि हम तो दत्तात्रेयजी, हनुमानजी या महादेव को ही अपना गुरु मानते हैं और किसी को नहीं (इसमें एक प्रकार का अहंभाव होता है) अथवा हम तो बचपन से अपने कुलगुरु से दीक्षा ग्रहण कर चुके हैं। इस प्रकार की मानसिक धारणायें मनुष्य के साधनापथ पर अवरोध उत्पन्न करती हैं। वास्तव में महादेव तो जगत्गुरु हैं। ऐसी धारणा प्रत्येक मनुष्य में होनी

चाहिये, परंतु मनुष्य योनि में जन्म लेने के पश्चात् प्रत्येक मनुष्य को ज्ञानार्जित करने हेतु मनुष्य रूपी गुरु ही ग्रहण करना होगा, देवगुरु धारण करने की योग्यता साधारण मनुष्य में किस प्रकार हो सकती है? केवल आप ये मानते हैं कि अमुक देवता मेरे गुरु हैं, पर क्या उस देवता ने भी आपको शिष्य के रूप में स्वीकार किया है? देवता एक अच्छे उपासक का मार्गदर्शन अवश्य करते हैं, परंतु सूक्ष्मरूप से। आध्यात्मिक उपदेश, साधना सम्बन्धी समस्त क्रियाएं एवं विस्तारपूर्वक यमनियम तो मनुष्यरूपी गुरु ही प्रदान कर सकते हैं। स्वयं देवी-देवताओं ने भी मनुष्ययोनि में जन्म लेकर मनुष्यरूपी गुरु ही ग्रहण किये थे। आपने अपने बचपन में कहीं से भी शिक्षा-दीक्षा ली है, तो भी अगर वो वर्तमानकाल में आपको आध्यात्मिक एवं मांत्रिक ज्ञान देने में सक्षम नहीं है, आपके कष्टों को समाप्त करने में आपकी सहायता नहीं कर सकते या आपके गुरु स्वर्ग सिधार चुके हैं, तो आपको स्वकल्याण हेतु वर्तमानकाल में अन्य गुरु धारण कर निरन्तर आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ते रहना चाहिये। ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। अपने जीवनकाल में निरन्तर इसकी अभिवृद्धि करते रहना चाहिये। आपके पास चाहे बहुत अच्छा विद्याज्ञान है, फिर भी

जिस प्रकार किसी भी पूजन में गणपति की प्रथम पूजा अनिवार्य है, ठीक उसी प्रकार देव पूजा से पूर्व गुरुपूजा एवं गुरु आज्ञा अनिवार्य है। स्वयं गुरु के लिये भी यही कर्म अनिवार्य हैं। गुरु को प्रसन्न करने के उपरान्त् ही ईश्वर को प्रसन्न किया जा सकता है। केवल एक बार दीक्षा लेने के उपरान्त् अथवा कार्यसिद्धि के उपरान्त् उनसे सम्बन्ध समाप्त कर देने से भी मनुष्य की साधना पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। कल्पद्रुम में लिखा है– 'मंत्र त्यागी व्यक्ति की मृत्यु होती है और गुरु त्यागी व्यक्ति को दरिद्रता रहती है। गुरु और मंत्र दोनों का परित्यागी व्यक्ति रौरव नरक में वास करता है।' भगवान् रुष्ट हों तो महागुरु रक्षा करने में सक्षम हैं, परंतु अगर गुरु ही रुष्ट हो जाये तो, कौन रक्षा करे। शास्त्रों में ऐसी कई कथाएं वर्णित हैं, जिनमें शिष्य ने केवल गुरुसेवा से ही देवसिद्धि प्राप्त कर ली थी।

साधक हमेशा उसी गुरु का चुनाव करे, जिनसे दीक्षा लेने के उपरान्त् वह उनके सम्पर्क में रह सके। बड़े–बड़े दीक्षा समारोह में जाकर एक साथ सैकड़ों लोगों के साथ दीक्षाग्रहण करने के उपरान्त् आप फिर कभी उनसे सम्पर्क ही न कर सके, उस मंत्रदीक्षा का कोई लाभ नहीं होता है, क्योंकि प्रत्येक देवसाधना

में दैवीय विघ्न एवं व्याधियां अवश्य आती हैं। इसके अतिरिक्त साधक की योग्यतानुसार देवता स्वप्नकाल में सूक्ष्म दिशा निर्देश भी प्रदान करते हैं। इन सबके समुचित समाधान के लिये साधनाकाल में श्रेष्ठगुरु की उपस्थिति अत्यावश्यक है। संसार का कोई भी शिष्य गुरु से केवल एक ही भेंट में पूर्ण ज्ञान ग्रहण नहीं कर सकता है।

मंत्र देवता चयन विधि- साधक दिन में गुरुदेव के साथ सर्वमंगल देवताओं की पूजार्चना के साथ महादेव के नीचे दिये मंत्र का पांच या सात माला का विधिवत् हवन सम्पन्न करे। शिष्य उस दिन उपवास रख रात्रिकाल अपने घर में स्थित देवमन्दिर में भूशय्या पर ही सोवे। पूर्ण रात्रिकाल में अखण्ड दीपक जलता रहे, साधक ऐसी व्यवस्था करे। शयन करने से पूर्व गुरुपूजन कर महादेव के निम्नमंत्र की पांच या सात माला का जप तथा रात्रिसूक्त का एक पाठ करे एवं अन्त में 108 दीपक प्रज्जवलित कर महादेव को समर्पित करे तथा क्षमायाचना करते हुए जगत्गुरु महादेव से अपने इष्टदेवता एवं मंत्र के विषय में दिशानिर्देश प्रदान करने हेतु प्रार्थना करे-

मंत्र– 'ॐ हिलि हिलि शूलपाणये स्वाहा। नमो जय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने। वामाय विश्वरूपाय स्वप्नााधिपतये नमः। स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः। क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वरः।'

इस पूजन के पश्चात् किसी से कोई वार्तालाप या अन्य कोई कर्म न करे। मंत्र जप करने के उपरान्त् महादेव का मानसिक रूप से चिंतन करते–करते ही सो जाये ऐसा प्रयास करना चाहिये। इससे साधक को स्वप्नकाल में अपने इष्टदेवता अथवा जपनीय मंत्र का साक्षात्कार होगा। स्वप्न में महादेव, स्वगुरु, इष्टदेवता, पितरदेव, कोई वृद्ध ऋषिमुनि, कोई श्वेतवस्त्रा अप्सरा आदि के द्वारा मंत्र या देवता के विषय में ज्ञान मिल सकता है। इसके अतिरिक्त स्वप्न में मंत्र केवल सुनाई या दिखाई दे सकता है। फिर उस मंत्र को गुरुमुख से ग्रहण कर साधना में अग्रसर होना चाहिये। स्वप्न में कई बार कुछ ऐसे संकेत भी मिल जाते हैं, जिसे साधारण मनुष्य नहीं समझ सकता है। अतः जो भी स्वप्न दिखाई दे, अगले दिन वह गुरु को सुनाकर उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करे। स्वप्न दृश्य का शुभाशुभ फल विशिष्ट गुरु ही बता सकता है। कई बार ऐसा भी हो जाता है कि जो रात्रिकाल में दिखाई देता है वह सुबह तक सही प्रकार से याद

नहीं रहता है। अतः स्वप्न में जो दृश्य दिखाई दे, जैसी ही जाग्रतावस्था में आये तो उसे तत्काल लिख ले। किसी कारणवश एक दिन में कुछ दिशानिर्देश प्राप्त न हो तो इस पूर्ण विधान को तीन दिन तक करना चाहिये।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana